5

रहीम

आप कुछ भक्तिकालीन कविताएँ पढ़ चुके हैं। आपने अनुभव किया होगा कि इस काल की कविता में ईश्वर-भक्ति के साथ मनुष्य की दैनिक जीवन की उलझनों का वर्णन भी है और उनसे छुटकारा पाने के लिए आवश्यक नैतिक बल प्राप्त करने के उपायों का भी उल्लेख है। इसीलिए इस कविता को धर्म और नीति की कविता के रूप में जाना जाता है। कवि रहीम भक्तिकाल और रीतिकाल के मिलन बिंदु पर हैं। उन्होंने भक्ति, नीति और श्रंगार का बहुत सुंदर निरूपण किया है। वे विशेष रूप से अपने नीतिपरक दोहों के लिए विख्यात हैं। रहीम को लोक-व्यवहार का बहुत अच्छा ज्ञान था। उनके लिखे दोहे कहावतों और लोकोक्तियों का रूप ग्रहण कर चुके हैं। तभी तो रहीम का काव्य बहुत लोकप्रिय है। छंदों में उन्हें दोहा, सोरठा तथा बरवै अधिक प्रिय हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- निर्धारित दोहों का भाव स्पष्ट कर सकेंगे;
- कवि की काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कर सकेंगे;
- प्रयुक्त अंतर्कथाओं का दैनिक जीवन में उपयुक्त प्रयोग कर सकेंगे;
- भाव और शिल्प सौंदर्य का विश्लेषण कर सकेंगे;
- रहीम की रचना-शैली पर टिप्पणी कर सकेंगे।

क्रियाकलाप

आपने आस-पास ऐसे बहुत से लोगों को देखा होगा जो अचानक ऊँचे पद पर पहुँच गए या बहुत-सी संपत्ति मिल गई। और उनका व्यवहार सामान्य नहीं रहा। कुछ प्रसंग

टिप्पणी

याद कीजिए। यदि किसी बच्चे के कोई रिश्तेदार उसके लिए कुछ बहुत अच्छे खिलौने ले आएँ और वैसे खिलौने उसके या उसके मित्रों के पास न रहें हों तो आमतौर पर ऐसे बच्चे का अपने मित्रों के बीच व्यवहार पहले जैसा सहज नहीं रहता।

कुछ ऐसे परिवार आपने देखे होंगे, जो अत्यंत सामान्य स्तर पर जीवन-निर्वाह कर रहे हों, किंतु उनका कोई लड़का या लड़की अच्छी नौकरी में चुन लिया जाए, तो पूरे परिवार का अपने पड़ोसियों और रिश्तेदारों के प्रति व्यवहार बदल जाता है। ऐसे उदाहरण आपके आस-पास बहुत से हैं, कुछ याद करके यहाँ लिखिए।

_____

_____

_____

शब्दार्थ

ओछो – छिछोरा, गलत तरीके से
अति – बहुत, अधिक
प्यादा – शतरंज के खेल का एक मोहरा पैदल (यह सीधे खानों में चलता है)
ते – से
फ़रजी – शतरंज के खेल का वज़ीर (यह तिरछे खानों में चलता है)
बारे – 1. बाल्यकाल में (कपूत के अर्थ में)
2. जलाने पर (दीपक के अर्थ में)
बढ़ै – 1. बड़े होने पर (कपूत के अर्थ में)
2. बुझने पर (दीपक के अर्थ में)
अँसुआ – आँसू
नैन – नेत्र, आँखें
ढरि – ढुलककर
जिय – हृदय, दिल
गेह – ग ह, घर
कस – क्यों
जनमत – जन्म लेते ही (पैदा होते ही)
जगत – दुनिया
बैर – शत्रुता (दुश्मनी)
प्रीति – प्रेम (प्यार)
अभ्यास – किसी काम को करने की दक्षता
जस – यश, कीर्ति

5.1 मूलपाठ

आइए, अब रहीम की कविता का आनंद लें:

दोहे

1. जो रहीम ओछो बढ़ै, तौ अति ही इतराय।
प्यादे सों फ़रजी भयो, टेढ़ो-टेढ़ो जाय।।

2. जो रहीम गति दीप की, कुल कपूत गति सोय।
बारे उजियारो लगै, बढ़ै अँधेरो होय।।

3. रहिमन अँसुआ नैन ढरि, जिय दुख प्रगट करेइ।
जाहि निकारो गेह ते, कस न भेद कहि देइ।।

4. यह रहीम निज संग लै, जनमत जगत न कोय।
बैर, प्रीति, अभ्यास, जस, होत होत ही होय।।

टिप्पणी

5. टूटे सुजन मनाइए, जो टूटे सौ बार।
रहिमन फिरि-फिरि पोहिए, टूटे मुक्ताहार।।

6. काज परै कछु और है, काज सरै कछु और।
रहिमन भाँवर के भये, नदी सेरावत मौर।।

7. वे रहीम नर धन्य हैं, पर उपकारी अंग।
बाँटनवारे के लगै, ज्यों मेंहदी को रंग।।

सोरठा

8. रहिमन मोहिं न सुहाय, अमी पियावै मान बिनु।
बरु विष देय बुलाय, मान सहित मरिबो भलो।।

बरवै

9. बाहिर लैकै दियवा, वारन जाय।
सासु ननद ढिग पहुँचत, देत बुझाय।।

10. लैकै सुघरु खुरुपिया, पिय के साथ।
छइबैं एक छतरिया, बरखत पाथ।।

शब्दार्थ

सुजन	– स्वजन (अपने लोग, कुटुम्बी), अच्छे लोग
पोहिए	– पिरोइए (पिरोते हैं)
मुक्ताहार	– मोतियों का हार
काज	– काम
काज सरे	– काम निकलने पर
भाँवर	– विवाह के समय के फेरे
सेरावत	– सिराना (नदी में प्रवाहित करना)
मौर	– दूल्हे के सिर पर पहनाया जाने वाला एक आभूषण, मुकुट
नर	– मनुष्य
पर	– दूसरे के
उपकारी	– भलाई करने वाला
अंग	– शरीर
बाँटनवारे	– बाँटने वाले
न सुहाय	– नहीं भाता है (अच्छा नहीं लगता है)
अमी	– अमत
मान बिनु	– बिना सम्मान के (बिना आदर के)
विष	– जहर
मरिबो	– मरना
भलो	– अच्छा, रुचिकर
दियवा	– दिया
वारन	– बालने, जलाने
ढिग	– समीप (पास)
सुघरु	– सुग हस्थिन (सुघड़)
छइबैं	– छाएँगी ओढ़ाएँगे
खुरुपिया	– खुरपी
बरखत	– वर्षा हो रही है
पाथ	– मार्ग

टिप्पणी

5.2 आइए समझें

आइए, पहले दोहे को एक बार फिर से पढ़ें

जो रहीम ओछो बढ़ै,
तो अति ही इतराय।
प्यादे सों फ़रज़ी भयो,
टेढ़ो-टेढ़ो जाय।।

प्रसंग

जो व्यक्ति किसी कारणवश अपने गुण और सामर्थ्य से अधिक कुछ पा लेता है वह घमंडी हो जाता है तथा अपने मूल व्यवहार का त्याग कर इतराने लगता है। प्रस्तुत दोहे में रहीम ने शतरंज के खेल के माध्यम से ऐसे व्यक्तियों के मनोविज्ञान को स्पष्ट किया है।

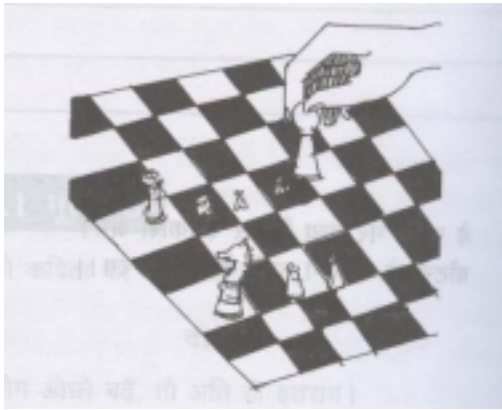

व्याख्या

आइए, सबसे पहले हम शतरंज के खेल के प्रासंगिक हिस्से को समझें। शतरंज के खेल में प्यादे की चाल सामने की ओर के सीधे खानों में एक-एक खाने की होती है तथा वजीर सीधे और तिरछे (आड़े) खानों में कितनी भी दूरी तक चल सकता है। जब कोई प्यादा एक-एक खाना चलते हुए आखिरी खाने तक पहुँच जाता है, तो उस खाने में मूल रूप से रहने वाले मोहरे के बराबर हो जाता है अर्थात् उसी की चाल चलने लगता है। अतः यदि कोई प्यादा वज़ीर के खाने तक पहुँच जाए तो वह वज़ीर के समकक्ष हो जाएगा तथा उसी की चाल चलने लगेगा।

रहीम कहते हैं कि यदि किसी साधारण व्यक्ति को किन्हीं कारणों से कोई ऊँचा पद मिल जाता है, तो वह उतना ही इतराने लगता है जैसे कि शतरंज के खेल में प्यादा फ़रजी बनते ही टेढ़ा-टेढ़ा चलने लगता है अर्थात् जब किसी व्यक्ति को उसके गुण, शक्ति और सामर्थ्य से बढ़कर कुछ अधिक (पद, पैसा इत्यादि) प्राप्त हो जाता है, तो वह अपने सहज व्यवहार को त्यागकर घमंड से भर जाता है और अन्य लोगों से सीधे मुँह बात नहीं करता।

टिप्पणी

(क) ''प्यादे से फ़रज़ी भयो टेढ़ो-टेढ़ो जाय'' रहीम की अत्यंत प्रभावशाली सूक्तियों में से एक है। जनता के बीच यह कहावत के रूप में खूब प्रचलित है।

(ख) आइए, इस प्रसंग में तुलसी की यह पंक्ति देखें - 'प्रभुता पाइ काहि मद नाहीं।' (प्रभुता पाकर किसे अहंकार नहीं होता।)

टिप्पणी

दोहा - 2

प्रसंग

प्रस्तुत दोहे में रहीम ने 'बारे' और 'बढ़ै' के श्लेष से दीपक और कपूत की तुलना की है। घर में कुपुत्र अर्थात् नालायक बेटे की बचपन की हरकतें जितनी अच्छी लगती हैं, बड़े होने पर उसकी वही हरकतें दुखदायी हो जाती हैं।

व्याख्या

आइए, सबसे पहले हम 'बारे' और 'बढ़ै' का अर्थ दीपक के संदर्भ में समझ लें। आजकल बिजली के आ जाने के कारण दिये का चलन समाप्त हो गया है, अतः ये शब्द आपके लिए अपरिचित हो सकते हैं। बिजली के घर-घर पहुँचने से पहले रात को रोशनी प्राप्त करने के लिए 'दिये' प्रयोग में लाए जाते थे। भारतीय संस्कृति में शब्दों का प्रयोग अत्यंत सावधानी से करने की परंपरा रही है। यदि कोई शब्द अपने आम प्रयोग में किसी अनिष्ट या अशुभ संकेत रखता है तो उसे शुभ, पवित्र तथा जीवन और रोज़गार से संबंधित बातों में प्रयोग नहीं किया जाता। आपने दुकान के संदर्भ में 'बढ़ाना' क्रिया का प्रयोग सुना होगा। चूँकि दुकान बंद करना दुकानदार के रोज़गार के बंद होने का भी अर्थ रखता है, इसलिए कुछ समय तक (रोज शाम को) 'दुकान बंद करना' की जगह 'दुकान बढ़ाना' कहा जाता है। इसी प्रकार, चूँकि 'दिया' प्रकाश देता है इसलिए 'दिया बुझाना' की जगह 'दिया बढ़ाना' तथा 'दिया जलाना' की जगह 'दिया बालना' का प्रयोग किया जाता था। ब्रज भाषा में 'ल' वर्ण की जगह अक्सर 'र' का प्रयोग किया जाता है जैसे–पालना-पारना, डोली-डोरी आदि। इसी कारण 'बाले' (बालपन पर) के स्थान पर 'बारे' और 'बालने' (दिया जलाने) के स्थान पर 'बारे' का प्रयोग है।

जो रहीम गति दीप की,
कुल कपूत गति सोय।
बारे उजियारो लगै,
बढ़ै अँधेरो होय।।

कुपुत्र या पुत्र के अर्थ में 'बारे' का अर्थ बाल्यकाल में अर्थात् बचपन में होगा तथा 'बढ़ै' का उम्र बढ़ने या सयाना होने पर।

अब इस दोहे की व्याख्या करें:

रहीम कहते हैं कि दीपक की और परिवार में उत्पन्न कुपुत्र की गति एक समान होती है। जिस प्रकार दीपक के 'बालने' पर प्रकाश फैलता है अर्थात् वह प्रसन्नता का कारण होता है और 'बढ़ जाने' पर अँधेरा हो जाता है अर्थात् वह व्यक्ति को असमर्थ और असहाय बना देता है और इस तरह दुख का कारण बन जाता है। उसी प्रकार नालायक पुत्र भी अपनी चेष्टाओं और शरारतों के कारण बाल्यकाल में तो अच्छा लगता है पर बड़े होने पर उसकी वही हरकतें अत्यंत दुखदायी हो जाती हैं। बचपन में माता-पिता बच्चे की वात्सल्यमयी क्रीड़ाओं और चेष्टाओं से प्रसन्न होते हैं, किंतु बड़े होने पर अगर यही बालक वैसी ही शरारतें करता रहे तो कपूत सिद्ध होता है, और दुःख का कारण हो जाता है।

टिप्पणी

टिप्पणी

(क) इस दोहे में 'बारे' तथा 'बढ़ै' शब्दों का एक-एक बार ही प्रयोग हुआ है पर ये 'दीपक' और 'कपूत' के लिए भिन्न-भिन्न अर्थ देते हैं। अतः इन दोनों शब्दों में एक से अधिक अर्थ देने के कारण **श्लेष अलंकार** है। **श्लेष** का अर्थ होता है चिपका हुआ। जब एक शब्द से कई अर्थ प्रकट हों तो वहाँ पर श्लेष अलंकार होता है। प्रस्तुत दोहे के माध्यम से आपने श्लेष का उदाहरण तो समझ ही लिया है।

(ख) 'कुल कपूत' में 'क' वर्ण की आव त्ति होने से **अनुप्रास अलंकार** है।

(ग) दो बिल्कुल भिन्न चीजों में समानता प्रस्तुत करके रहीम ने अपनी विलक्षण प्रतिभा और सूक्ष्म अवलोकन-शक्ति का परिचय दिया है।

(घ) उजाले और अंधेरे से क्रमशः सुख और दुख का अर्थ प्राप्त होता है। साहित्य में ये प्रतीकार्थ रूढ़ हो चुके हैं।

पाठगत प्रश्न 5.1

1. निम्नलिखित कथनों में से सही के सामने 'हाँ' और गलत के सामने 'नहीं' लिखिए:
   (क) शतरंज में प्यादे की चाल तिरछे खानों वाली होती है।
   (ख) कोई भी प्यादा आख़िरी खाने में पहुँच कर उसी मोहरे के समकक्ष हो जाता है।
   (ग) सामान्यतः व्यक्ति आकस्मिक रूप से महत्त्व पाकर घमंडी हो जाता है।
   (घ) दीपक बालने को 'दिया बढ़ाना' कहा जाता है।
   (ङ) कुपुत्र बड़ा होने पर अत्यंत दुख देता है।
   (च) जब कोई शब्द एक से अधिक अर्थ देता है तो वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।
2. शतरंज का प्यादा किस श्रेणी के लोगों का प्रतीक है?
3. साधारण व्यक्ति अचानक ऊँचा उठ जाने पर कैसा हो जाता है?
4. रहीम के दूसरे दोहे में दीपक किसका प्रतीक है?
5. इस दोहे में 'बारे' शब्द का क्या अर्थ है?

दोहा - 3

प्रसंग

प्रस्तुत दोहे में रहीम ने आँसुओं के द्वारा मन का दुख प्रकट होने की बात के उदाहरण से घर की बात घर के भीतर ही रखने का संकेत किया है।

टिप्पणी

व्याख्या

रहीम कहते हैं कि आँखों से आँसू निकलकर व्यक्ति के हृदय के दुख को व्यक्त कर देते हैं और वे करें भी क्यों नहीं, जब किसी को घर से निकाला जाएगा तो वह घर का भेद तो दूसरों तक पहुँचाएगा ही।

यहाँ दो बातों का उल्लेख अत्यंत आवश्यक है: शास्त्रों में मानव देह का वर्णन घर के रूप में किया गया है जिसके दस दरवाजे हैं, जिनमें दो दरवाजे दोनों नेत्र हैं।

रामकथा में रावण द्वारा अपने छोटे भाई विभीषण को अपमानित करके लंका से निकाल देने का प्रसंग है। घर से निकाले जाने पर विभीषण राम से आ मिला और उसी ने राम को लंका के समस्त भेद तथा रावण की म त्यु का रहस्य भी बताया। इसी से जनता में कहावत भी मशहूर है – 'घर का भेदी लंका ढावै।'

रहिमन अँसुआ नैन ढरि,
जिय दुख प्रगट करेइ।
जाहि निकारो गेह ते,
कस न भेद कहि देइ।।

दोहा - 4

प्रसंग

प्रस्तुत दोहे में रहीम ने वैर, प्रेम, अभ्यास और कीर्ति के विषय में बताया है कि ये चीजें कोई भी व्यक्ति जन्म से प्राप्त नहीं करता बल्कि ये समय के साथ-साथ विकसित होती हैं।

व्याख्या

रहीम कहते हैं कि वैर अर्थात् शत्रुता, प्रेम, किसी कार्य को करने का कौशल तथा यश व्यक्ति के जन्मजात गुण नहीं होते और न ही अल्प समय में प्राप्त होते हैं, बल्कि ये धीरे-धीरे ही बढ़ते हैं अर्थात् केवल निरंतरता से ही इनका विकास होता है। आइए, इन पर क्रम से विचार करें।

वैर मन का वह भाव है जो अपने आलम्बन का नाम आते ही जाग जाता है अर्थात् यदि हमारा किसी व्यक्ति से वैर है, तो उसका नाम सुनते ही या उसकी शक्ल देखते ही, हमारे भीतर यह भाव जागने लगता है। वैर, घ णा और क्रोध का मिश्रित रूप है। वैर के मायने केवल लड़ाई या दुश्मनी नहीं हैं। लड़ाई या दुश्मनी तो किसी भी छोटे या बड़े कारण से हो सकती है जो या तो कारण के खत्म हो जाने अथवा कुछ समय बीतने पर समाप्त भी हो जाती है। किंतु, वैर मूलतः व्यक्ति की दूसरे व्यक्ति या व्यक्तियों के प्रति पूर्ण अस्वीकार की भावना है, जो घ णा या अहित-साधन के द्वारा व्यक्त होती है। यह अस्वीकार लंबी अवधि तक नकारात्मक भावों के एकत्रित होते रहने से ही उत्पन्न होता है। वैर के बारे में आप 'क्रोध' पाठ में विस्तार से पढ़ेंगे।

यह रहीम निज संग लै
जनमत जगत न कोय।
बैर प्रीति अभ्यास, जस,
होत होत ही होय।।

प्रीति अर्थात् प्रेम भी समय के साथ ही गाढ़ा होता है। किसी की क्षणिक समीपता से जो सकारात्मक भाव हमारे मन में होता है, उसे अक्सर प्रेम कह दिया जाता है, किंतु वह प्रेम नहीं महज आकर्षण होता है। प्रेम साहचर्यजन्य होता है अर्थात् साथ रहने से पैदा होता है। प्रेम वैर के विपरीत पूर्ण स्वीकार की भावना है। हम जिससे प्रेम करते हैं उसके लिए कुछ भी करने को तत्पर रहते हैं और यह भावना केवल लंबे समय तक साथ रहने से ही उत्पन्न होती है।

टिप्पणी

अभ्यास तो स्वयं स्पष्ट है कि समयावधि से ही आता है। किसी काम को करने का कौशल काम के लगातार करते रहने से ही प्राप्त होता है। फिर यह अभ्यास चाहे संगीत का हो या हॉकी खेलने का, ड्राइविंग का हो या चित्र बनाने का या किसी अन्य काम का। यश अर्थात् कीर्ति (प्रसिद्धि) भी लंबे समय तक किसी क्षेत्र में सतत श्रेष्ठ कार्य करते रहने का ही परिणाम है।

चर्चा और यश में अंतर है। चर्चा कुछ समय तक होती है, यश दीर्घकालिक होता है। चर्चा प्रायोजित हो सकती है किंतु यश महत्त्वपूर्ण योगदान से ही प्राप्त होता है।

टिप्पणी

(क) *'जनमत जगत'* तथा *'होत होत ही होय'* में क्रमशः 'ज' 'त' तथा 'ह' वर्णों की आव त्ति से अनुप्रास अलंकार है।

(ख) *'होत होत ही होय'* कथन का चारुत्व और अनुप्रास अलंकार दर्शनीय है।

(ग) प्रस्तुत दोहे में रहीम ने कम शब्दों में बहुत अधिक कह दिया है। गहन विचारों का इतने कम शब्दों में तथा इतनी सरल भाषा में अत्यंत सहजता से कह देने की विशेषता तुलसी के बाद रहीम में ही दिखाई पड़ती है।

पाठगत प्रश्न 5.2

निम्नलिखित कथनों में से सही के सामने 'हाँ' और गलत के सामने 'नहीं' लिखिए :

1. (क) आँखों से निकले आँसू व्यक्ति के मन के दुख को व्यक्त कर देते हैं।
   (ख) आँखें मानव देह रूपी घर के दो दरवाज़े हैं।
   (ग) राम को लंका के सारे भेद उनके गुप्तचरों ने बताए थे, न कि विभीषण ने।
   (घ) प्रेम साथ रहने से ही उत्पन्न होता है।
   (ङ) वैर जन्मजात होता है।
   (च) किसी क्षेत्र में सतत श्रेष्ठ प्रदर्शन से व्यक्ति को यश प्राप्त होता है।
2. व्यक्ति के हृदय के दुख को कौन व्यक्त करता है?
3. विभीषण लंका से निकाले जाने पर किसकी शरण में जाता है?
4. परस्पर साथ रहने से कौन-से भाव उत्पन्न होते हैं?

दोहा - 5

प्रसंग

प्रस्तुत दोहे में रहीम ने सज्जनों तथा अपने लोगों (स्वजन) के रूठ जाने पर उन्हें बार-बार मनाने की बात कही है।

टिप्पणी

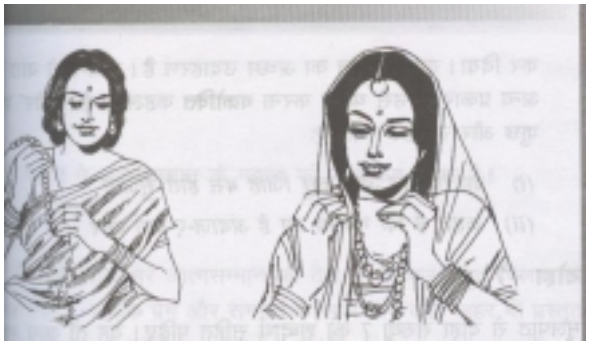

टूटे सुजन मनाइए,
जो टूटें सौ बार।
रहिमन फिरि-फिरि पोहिए
टूटे मुक्ताहार।।

व्याख्या

रहीम कहते हैं कि जिस प्रकार मोतियों के हार के टूट जाने पर मोतियों को फेंका नहीं जाता बल्कि उन्हें बार-बार धागे में पिरोकर फिर से हार बना दिया जाता है; उसी प्रकार श्रेष्ठ लोगों तथा अपने लोगों (कुटुंबी, संबंधी, मित्र आदि) के रूठने या नाराज़ होने पर उन्हें हर बार मना लेना चाहिए। (सुजन शब्द का अर्थ है – सु+जन अर्थात् श्रेष्ठ लोग तथा स्व+जन अर्थात् अपने लोग, दोनों ही रूपों में ग्रहण किया जा सकता है। दोनों अर्थ ग्रहण करने पर अर्थ-सौंदर्य बढ़ जाता है।)

टिप्पणी

(क) 'सुजन' में श्लेष अलंकार है। जिसे आप व्याख्या पढ़ने पर समझ ही गए होंगे।

(ख) श्रेष्ठ मनुष्यों का मोतियों से साम्य सुंदर है, उपयुक्त भी है और प्रचलित भी।

(ग) बहुत सादा और सरल तरीके से लोक-व्यवहार की नीति को व्यक्त किया गया है।

(घ) रहीम का यह दोहा लोक में बहुत अधिक प्रचलित है।

5.3 आइए, स्वयं पढ़ें

दोहा - 6

आपने रहीम के पाँच दोहों का आनंद लिया। इस आनंद के साथ-साथ आपने इस बात पर भी ज़रूर ध्यान दिया होगा कि दोहे के अर्थ और भाव को कैसे समझा जाए। क्या अब आप खुद किसी दोहे की व्याख्या कर सकते हैं। क्यों नहीं, बिल्कुल कर सकते हैं अगर ... अगर आपको थोड़ी-सी मदद मिल जाए, यही न ...।

तो फिर हो जाइए तैयार और एक बार दोहा सं. 6 को पढ़ डालिए। मूलपाठ में शब्दों के अर्थ तो मिल ही रहे हैं, कुछ आवश्यक संकेत मदद के लिए यहाँ मौजूद हैं:

काज परे कछु और है,
काज सरे कछु और।
रहिमन भाँवर के भये,
नदी सेरावत मौर।।

- प्रसंग है काम पड़ने और काम निकल जाने पर मनुष्य के व्यवहार में बदलाव
- उदाहरण है विवाह में दूल्हे द्वारा सिर पर पहना जाने वाला एक प्रकार का मुकुट। 'कुछ और' कहकर कवि ने व्यवहार को स्पष्ट न करते हुए भी बहुत कुछ स्पष्ट

टिप्पणी

कर दिया। यह वक्रोक्ति का अच्छा उदाहरण है। सीधे-सीधे बात न कहकर किसी अन्य प्रकार से उसे व्यक्त करना **वक्रोक्ति** कहलाता है। 'और' शब्द के प्रयोग के कुछ और उदाहरण देखिए:

(i) *वह चितवन औरे कछु जिहि बस होत सुजान*

(ii) *कहते हैं कि गालिब का है अंदाज़-ए-बयां* ***और***

दोहा - 7

मूलपाठ से दोहा संख्या 7 को शब्दार्थ सहित पढ़िए। यह तो आप समझ ही गए होंगे कि दोहे में परोपकारी मनुष्यों के विषय में कहा गया है।

वे रहीम नर धन्य हैं,
पर उपकारी अंग।
बाँटनवारे के लगे, ज्यों
मेंहदी को रंग।।

आप कुछ लोगों को यह कहते सुनते होंगे कि 'क्या रखा है परोपकार में'। रहीम के इस दोहे की दूसरी पंक्ति में इसका कुछ संकेत है, ज़रा ध्यान दीजिए। हाँ... आया न पकड़ में। तो अब कागज़-कलम उठाइए और एक अच्छी-सी व्याख्या लिख डालिए। देखिए, इसमें **द ष्टांत अलंकार** भी है। इसके बारे में हम पहले आपको बता चुके हैं।

पाठगत प्रश्न 5.3

1. निम्नलिखित कथनों में सही के सामने 'हाँ' और गलत के सामने 'नहीं' लिखिए:
   (क) रहीम ने श्रेष्ठ लोगों की तुलना माला के धागे से की है।
   (ख) यदि किसी अपने से मनमुटाव हो जाए तो उसकी परवाह नहीं करनी चाहिए।
   (ग) 'सुजन' शब्द में श्लेष अलंकार है।
   (घ) काम पड़ने पर लोग किसी को बहुत अधिक महत्त्व देते हैं किंतु बाद में उसे भुला देते हैं।
   (ङ) भाँवर पड़ने के बाद दूल्हा नित्य मौर को सिर पर धारण करता है।
   (च) परोपकारी मनुष्य दूसरों का भला करने के साथ-साथ अपने अस्तित्व को सार्थक करता है।
   (छ) मेंहदी बाँटने वाले के हाथों में भी रच जाती है।
   (ज) व्यक्ति को परोपकारी नहीं होना चाहिए।
2. इस दोहे में मोती किसका प्रतीक है?
3. रहीम किन लोगों को मनाने की बात कहता है?
4. इस दोहे में रहीम ने किस तरह के मनुष्य को धन्य कहा है?

अभी तक आपने कवि रहीम के दोहे पढ़े। आइए अब उनका एक सोरठा पढ़ते हैं। आपके मन में अवश्य ही प्रश्न उठा होगा कि यह सोरठा क्या होता है? इसके बारे में हम इसी पाठ में आगे पढ़ेंगे।

टिप्पणी

सोरठा - 8

प्रसंग

प्रस्तुत सोरठे में रहीम ने आत्मसम्मान के महत्त्व को रेखांकित किया है।

व्याख्या

रहीम कहते हैं कि यदि कोई मेरे आत्मसम्मान को ठेस पहुँचा कर अम त पिलाए तो वह मुझे स्वीकार नहीं हैं, जबकि प्रेम और सम्मान के साथ यदि कोई ज़हर भी प्रस्तुत करे तो मुझे उसे पीकर मर जाना अच्छा लगेगा। व्यक्ति को आत्मसम्मान की रक्षा करनी चाहिए। यदि किसी से उसका आत्मसम्मान छीन लिया जाए तो जीवन में कुछ भी नहीं बचता, फिर वह अमर होकर भी क्या करेगा और यदि, कहीं प्रेम और सम्मान मिलता है तो ज़हर पीने में भी नुकसान नहीं, क्योंकि जीवन में प्रेम से अधिक पाने को और कुछ भी नहीं है। सामाजिक संबंधों की ऊष्मा और सार्थकता प्रेम में ही है। जहाँ प्रेम है, वहाँ व्यक्ति के सम्मान की रक्षा भी है। इसी आत्मसम्मान की रक्षा के लिए व्यक्ति से लेकर राष्ट्रों तक ने युद्ध लड़े हैं। बहुत से लोगों ने निजी आत्मसम्मान की रक्षा के लिए प्राणों की आहुति दी है। इसके बिना जीवन की कल्पना ही क्या? और यह मिल जाए तो फिर और जीने की कामना भी छोड़ी जा सकती है। दुनिया की सारी चीज़ें (यथा–धन– दौलत, पद आदि) आज हैं, कल नहीं भी हो सकतीं और यदि आज नहीं हैं तो कल प्राप्त की जा सकती हैं पर व्यक्ति सम्मान को एक बार खोकर पुनः प्राप्त नहीं कर सकता।

रहिमन मोहिं न सुहाय
अमी पियावै मान बिनु।
बरु विष देय बुलाय,
मान सहित मरिबो भलो।।

टिप्पणी

(क) आत्मसम्मान पर दुनिया की विभिन्न भाषाओं के बहुत से कवियों और शायरों ने बहुत सारी कविताएँ लिखी हैं। यहाँ सिर्फ़ दो उदाहरण प्रस्तुत हैं:

(i) *आवत ही हुलसै नहीं, नैनन नहीं सनेह।*
तुलसी तहाँ न जाइए, कंचन बरसै मेह।। – तुलसीदास

(जहाँ आपको देखकर दूसरे व्यक्ति को प्रसन्नता न हो और उसकी आँखों में प्रेम न दिखाई पड़े, वहाँ चाहे सोना बरस रहा हो तो भी नहीं जाना चाहिए।)

(ii) *बंदगी में भी वो आज़ाद-ओ-खुदबीं हैं कि हम।*
उलटे फिर आएँ दर-ए-काबा अगर वा न हुआ।। – गालिब

(हम भक्ति में भी इतने स्वाभिमानी हैं कि अगर हमारे पहुँचने पर काबे का दरवाज़ा खुला न हो तो उलटे लौट आएँ।)

(ख) इस सोरठे की दूसरी पंक्ति सूक्ति के रूप में इस तरह प्रचलित है – *'प्रेम सहित मरिबो भलो जो विष देय बुलाय।'*

टिप्पणी

बरवै - 9

प्रसंग

प्रस्तुत बरवै में रहीम ने आतुरता से प्रिय की प्रतीक्षा में रत ग हस्थ नायिका के मनोभावों का वर्णन किया है।

व्याख्या

बाहिर लैकै दियवा,
बारन जाय।
सासु ननद ढिग पहुँचत
देत बुझाय।।

शाम हो चुकी है। नायिका के पति के घर लौटने का समय हो गया है। वह दिन भर के बिछुड़े अपने प्रिय से मिलने को आतुर है। उसका एक-एक पल प्रिय की आहट की प्रतीक्षा में है। यह आतुरता इतनी बढ़ चुकी है कि उससे घर के भीतर नहीं रुका जा रहा। वह बार-बार दिया जलाकर द्वार पर जाती है, पर अपने आवेग के खुल जाने तथा सास और ननद के ताने के डर से रास्ते में बैठी अपनी सास और ननद तक पहुँचते-पहुँचते उसे बुझा देती है। नायिका ग हस्थ है और अपनी आतुरता को प्रकट नहीं होने देना चाहती। साथ ही, उसे भय भी है कि बाहर जाने पर सास और ननद उसे ताना भी दे सकती हैं और प्रताड़ित भी कर सकती हैं।

टिप्पणियाँ

(क) ग हस्थ प्रेम का अत्यंत सुंदर चित्रण है।

(ख) लोक संस्कृति पर रहीम की गहरी पकड़ का उत्तम उदाहरण है।

(ग) शृं गार रस है तथा भाषा अवधी है।

5.4 आइए, स्वयं पढ़ें

बरवै - 10

आपने अभी-अभी एक बरवै छंद का आनंद लिया। अब अगले बरवै को ध्यान से पढ़िए। शब्द तो सभी समझ में आ ही रहे होंगे, हाँ बस मानक हिंदी से थोड़ा-सा भिन्न रूप है बोलचाल की अवधी के इन शब्दों का। थोड़ा-सा प्रयास करते ही आप सभी शब्द समझ जाएँगे।

लैकै सुघरु खुरुपिया,
पिय के साथ।
छइबैं एक छतरिया,
बरखत पाथ।।

यह भी पहले बरवै की तरह ही ग हस्थ प्रेम का चित्र है। भला, क्या करना चाहती है नायिका? और किसके साथ? इन प्रश्नों के उत्तर बहुत स्पष्ट हैं और इन्हीं की व्याख्या को विशेषतः रेखांकित करना है...।

पाठगत प्रश्न 5.6

1. निम्नलिखित कथनों में से सही के सामने 'हाँ' और गलत के सामने 'नहीं' लिखिए:
   (क) आत्मसम्मान की रक्षा किसी भी कीमत पर करनी चाहिए। .....
   (ख) अम त ज़हर की तुलना में हर स्थिति में बेहतर है। .....

टिप्पणी

(ग) नायिका दीपक को इसलिए बुझा देती है कि कहीं उसकी सास बेकार में तेल खर्च करने पर न डाँटे। .....

(घ) पति की प्रतीक्षा में व्याकुल नायिका बार-बार द्वार तक जाना चाहती है। .....

(ङ) नायिका छतरी लेकर अपने पति के साथ निकलती है। .....

(च) बरसते हुए मार्ग में छप्पर की छतरी छाने के लिए नायिका खुरपी लेकर घर से निकलती है। .....

2. पठित सोरठे के आधार पर बताइए रहीम को क्या अच्छा नहीं लगता?
3. कवि को किस स्थिति में मरना भी अच्छा लगता है?
4. बरवै दस में कवि ने किस ऋतु का वर्णन किया है?
5. दोनों बरवै किस भाषा में लिखे गए हैं?

5.5 भाव और शिल्प सौंदर्य

रहीम के प्रत्येक दोहे, सोरठे और बरवै के अनूठे भावों का आपने आनंद लिया और उनकी शिल्पगत विशेषताओं से भी आप परिचित हुए। अब आप यहाँ पर अन्य पिछले पाठों के समान कुछ पंक्तियाँ रहीम के भाव और शिल्प सौंदर्य पर लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

आपको याद है न, रैदास का पाठ पढ़ते हुए आपने दोहे के बारे में जाना था। तुलसीदास के पाठ में भी आपने कुछ दोहे और साथ में चौपाइयाँ पढ़ी थीं। अब क्या आप बता सकते हैं कि दोहा किसे कहते हैं? यहाँ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

अब क्या आप बता सकते हैं कि सोरठा किसे कहते हैं? आप एक काम कीजिए। रहीम के सोरठे को इस प्रकार पढ़िए: पहले दूसरा चरण, फिर पहला, फिर तीसरा और अंत में चौथा! क्या कुछ लगा? जी हाँ, सोरठा दोहे का ठीक उलटा होता है। इसमें भी दो-दो चरणों के दो दल होते हैं पर दोहे के विपरीत इसके विषम अर्थात् पहले और तीसरे चरण में 11-11 तथा सम अर्थात् दूसरे और चौथे चरण में 13-13 मात्राएँ होती हैं। पहले और तीसरे चरण तुकांत होते हैं। उदाहरण के लिए यह सोरठा देखें:

रहिमन मोहि न सुहाय, अमी पियावत मान बिन।
पहला चरण (11 मात्राएँ) दूसरा चरण (13 मात्राएँ)

जो विष देय बुलाय, मान सहित मरिबो भलो।।
तीसरे चरण (11 मात्राएँ) चौथा चरण (13 मात्राएँ)

बरवै

बरवै छंद में भी दो-दो चरणों के दो दल होते हैं पर 12+7 की यति से 19 मात्राएँ होती हैं अर्थात इसके पहले और तीसरे चरण में 12-12 मात्राएँ तथा दूसरे और चौथे चरण में 7-7 मात्राएँ होती हैं। प्रत्येक दल के अंत में जगण (ISI) होता है। उदाहरण के लिए यह बरवै देखें:

बाहर लैके दियवा	वारन जाय।
।। ।।	।। ।
पहला चरण (12 मात्राएँ)	दूसरा चरण (7 मात्राएँ)
सासु ननद ढिग पहुँचत	देत बुझाय।।
। ।।। ।। ।।।।	। । ।
तीसरा चरण (12 मात्राएँ)	चौथा चरण (7 मात्राएँ)

5.6 आइए, स्वयं पढ़ें

रहीम की कविता का आस्वादन आप कर चुके हैं। आपने रहीम के दोहे पढ़ते समय जाना है कि रहीम अपने आसपास के वातावरण से कोई भी व्यवहार या क्रिया चुनते हैं और उससे कोई गंभीर नीतिपरक बात बता देते हैं। आपने पाठ में यह भी पढ़ा कि नीति की ऐसी ही बातें तुलसी के दोहों और चौपाइयों में भी मिलती हैं। आइए, हम तुलसी के एक दोहे को पढ़ें:

मुखिया मुख सो चाहिए, खान पान को एक।
पालै पोसै सकल अँग, तुलसी सहित बिबेक।।

यह तो आप समझ गए होंगे कि इस दोहे में बताया गया है कि मुखिया कैसा होना चाहिए। मुख-जैसा। अब सोचकर देखिए मुख-जैसा मुखिया क्यों कहा? स्वस्थ रहने के लिए हम भोजन करते हैं। किस अंग से? क्या वह अंग केवल अपना ध्यान रखता है? तो मुखिया को किसका ध्यान रखना चाहिए? मुखिया में आप क्या गुण आवश्यक समझते हैं? विवेक का क्या आशय है? मुखिया में विवेक क्यों आवश्यक है।

शब्दार्थ
मुखिया – घर, कबीले देश या किसी संस्था का प्रमुख
मुख-सो – मुख-सा (जैसा)
पाले पोसै – पालन-पोषण करे
अँग – शरीर, देश
विवेक – न्याय-अन्याय, सत्य-असत्य, उचित-अनुचित आदि को ध्यान रखने वाली बुद्धि

नीचे दिए गए दोहे मैं तुलसी की एक नीति है, एक सुझाव है; आइए, पढ़ें:–

आवत ही हर्षे नहीं, नैंनन नहीं सनेह।
तुलसी तहाँ न जाइए, कंचन बरसे मेह।।

तुलसी कहते हैं–वहाँ न जाइए जहाँ सोना बरस रहा हो। सोना बरसना–संपन्नता के लिए है। तो क्या तुलसी धनी-संपन्न घर में न जाने की बात करते हैं? तुलसी का संकेत समझने के लिए दोहे की पहली पंक्ति एक बार फिर पढ़िए। ऐसा संपन्न व्यक्ति जो आपके आने पर प्रसन्न नहीं होता, मिलने से प्रसन्नता नहीं प्रकट करता, वहाँ जाना आत्मसम्मान गँवाना है।

उपर्युक्त दोहों को आप कितना समझे? आइए, नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- मुखिया कैसा होना चाहिए?
- मुखिया की तुलना मुख से क्यों की गई है?
- विवेकी होना मुखिया के लिए क्यों आवश्यक है?
- स्वाभिमानी व्यक्ति को कहाँ नहीं जाना चाहिए?
- अतिथि के आने पर स्वाभाविक प्रतिक्रिया क्या होनी चाहिए?

5.7 आपने क्या सीखा

1. रहीम को लोक-संस्कृति, लोक-व्यवहार तथा शास्त्रों का गहरा ज्ञान था। उन्होंने इस ज्ञान को सामान्य भाषा में बड़ी सहजता के साथ अपनी कविता में व्यक्त किया है। वे साधारण मनुष्य के दैनिक जीवन से उदाहरण लेकर नीति की गूढ़ बातों को आसानी से समझा देते हैं। सूक्ष्म अवलोकन, शास्त्रज्ञान और सहज अभिव्यक्ति उनकी निजी विशेषता है।
2. यद्यपि रहीम ने फ़ारसी और संस्कृत में भी काव्य-रचना की है तथा अरबी और तुर्की भाषा में अनुवाद किए हैं, पर वे ब्रज और अवधी भाषा की काव्य रचनाओं के लिए जनता के बीच अधिक जाने जाते हैं। ब्रज तथा अवधी दोनों भाषाओं पर समान अधिकार रखने वाले कवियों में तुलसी के बाद रहीम का नाम सबसे ऊपर है।
3. आपने रहीम की कविता पढ़ते हुए दोहा, सोरठा और बरवै छंदों का आनंद लिया है। आप जानते हैं कि दोहे में 13-11–13-11 की यति से चार चरण होते हैं जबकि सोरठे में इसके उलटे अर्थात् 11-13–11-13 की यति से। बरवै छंद में 12-7–12-7 की यति से कुल चार चरण होते हैं।
4. जब किसी बात को समझाने के लिए अपने आस-पास के क्रियाकलाप, लोक में प्रचलित कथाओं अथवा पौराणिक प्रसंगों से उदाहरण दिए जाते हैं, तो उन्हें द ष्टांत कहते हैं। रहीम ने अपनी कविता में द ष्टांतों का बहुत सटीक प्रयोग किया है।

5. रहीम का समय भक्तिकाल और रीतिकाल के बीच की कड़ी है। उनकी कविता के केंद्र में भक्ति, नीति और श ंगार के तत्त्व हैं।

5.8 योग्यता विस्तार

कवि परिचय

रहीम का जन्म 17 दिसंबर 1556 ई. को लाहौर में हुआ था। इनका पूरा नाम अब्दुर्रहीम ख़ानख़ाना था। रहीम के पिता बैरम खाँ अकबर के संरक्षक थे। तुर्क पिता तथा मेव माता के पुत्र रहीम में दोनों परंपराओं का समन्वय मिलता है। उन्हें अरबी, फ़ारसी, तुर्की भाषाओं के साथ संस्कृत और ब्रज तथा अवधी भाषा का पर्याप्त ज्ञान था। शास्त्र तथा लोक-संस्कृति और लोक-व्यवहार में उन्हें दक्षता हासिल थी।

रहीम कलम के साथ-साथ तलवार के भी धनी थे। वे अकबर के मंत्री और सेनापति थे तथा उनकी गिनती नवरत्नों में होती थी। उन्होंने बहुत से युद्ध भी लड़े तथा उनमें विजय हासिल की। वे श्रेष्ठ कवि, योद्धा और दानवीर थे और उनके व्यक्तित्व में उदारता, सच्चरित्रता, सहजता और विनम्रता जैसे गुण थे। दान के संबंध में उनकी विनम्रता का उदाहरण देखें।

देनहार कोई और है, भेजत है दिन रैन।
लोग भरम हम पर करैं, यातें नीचे नैन।।

रहीम के जीवन में बहुत से उतार-चढ़ाव आते रहे। राजस्वी जीवन, पारिवारिक त्रासदियाँ, युद्ध की विभीषिका, कैद खाने की यंत्रणा–सभी को उन्होंने भोगा तथा इनसे प्राप्त भावों और विचारों को बड़ी सहजता से अपने काव्य में प्रस्तुत किया।

रहीम की प्रमुख रचनाएँ, 'दोहावली', 'नगर शोभा', 'बरवै नायिका-भेद' 'श ंगार सोरठा' आदि हैं। विस्त त अध्ययन के लिए डॉ. विद्यानिवास मिश्र द्वारा संपादित 'रहीम ग्रंथावली' का अध्ययन कीजिए।

5.9 पाठांत प्रश्न

1. रहीम ने प्यादे और फ़रज़ी का द ष्टांत क्यों दिया है?
2. आँसुओं को आँखों से बाहर क्यों नहीं निकालना चाहिए?
3. रहीम ने आत्मसम्मान की रक्षा का महत्त्व कैसे समझाया है?
4. निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए:

   (क) टूटे सुजन मनाइए, जो टूटें सौ बार।
   रहिमन फिरि-फिरि पोहिए, टूटे मुक्ताहार।।

   (ख) काज परै कछु और है, काज सरै कछु और।
   रहमिन भाँवर के भये, नदी सेरावत मौर।।

टिप्पणी

(ग) बाहर लैकै दियवा, वारन जाय।
सासु ननद ढिग पहुँचत देत बुझाय।।

(घ) रहिमन मोहिं न सुहाय, अमी पियावै मान बिनु।
बरु विष देय बुलाय, मान सहित मरिबो भलो।।

5. 'होत होत ही होय' में कौन-सा अलंकार है?

6. यमक और श्लेष अलंकार में अंतर स्पष्ट कीजिए तथा प्रत्येक का एक-एक उदाहरण भी दीजिए।

7. निम्नलिखित दोहे पढ़ कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

सुंदर जाके बित्त है, सो वह राखै गोइ।
कौड़ी फिरै उछालतो जो टुटपूँज्यो होइ।।

मन ही बड़ौ कपूत है, मन ही बड़ौ सपूत।
'सुंदर' जौ मन थिर रहै, तौ मन ही अवधूत।।

(क) यहाँ 'बित्त' का शाब्दिक अर्थ क्या है?

(ख) मन स्थिर होने पर मनुष्य किस अवस्था को प्राप्त कर लेता है?

(ग) कौड़ी उछालते फिरने वाले को कवि ने टुटपुँजिया क्यों कहा है?

(घ) कवि द्वारा मन की महिमा का बखान के पीछे क्या आशय है?

5.10 उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

5.1 (क) नहीं (ख) हाँ (ग) हाँ (घ) नहीं (ङ) हाँ (च) नहीं
2. सामान्य श्रेणी 3. घमंडी 4. कुपुत्र 5. बचपन, दिया जलाना

5.2 (क) हाँ (ख) हाँ (ग) नहीं (घ) हाँ (ङ) नहीं (च) हाँ
2. आँसू 3. राम 4. प्रेम, बैर

5.3 (क) नहीं (ख) नहीं (ग) हाँ (घ) हाँ (ङ) नहीं (च) हाँ (छ) हाँ (ज) नहीं
2. श्रेष्ठ लोग, अपने लोग, अच्छे लोग 3. अपने-अच्छे लोग 4. परोपकारी

5.4 (क) हाँ (ख) नहीं (ग) नहीं (घ) हाँ (ङ) नहीं (च) हाँ 2. आत्मसम्मान के बिना जीवन 3. सम्मान के साथ विषय पाना 4. वर्षा ऋतु 5. अवधी भाषा